International Journal of Research in IT and Management(IJRIM)
Available online at:http://euroasiapub.org
Vol. 7, Issue 12, December - 2017,
ISSN(o): 2231-4334 | ISSN(p): 2349-6517 | Impact Factor: 6.505| Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

आयुर्वेद की उत्पत्ति एवं प्रयोजन

डॉ॰ पूनम शर्मा

आयुर्वेद से अभिप्राय–

जिस शास्त्र में आयुष्य के लिए हितकारक और अहितकारक पदार्थो का उल्लेख हो और रोगों के निदान अर्थात् उत्पन्न होने का प्रधान कारण और उनकी शांति का उपाय अर्थात चिकित्सा का वर्णन किया गया हो, उसे विद्वान लोग आयुर्वेद कहते है। आयुर्वेद शास्त्र के द्वारा ही मनुष्य अपनी आयु को प्राप्त करता है। आयुर्वेद शब्द आयु और वेद दो शब्दों से मिलकर बना आयु शब्द का अर्थ है। जीवन तथा वेद शब्द का अर्थ है। ज्ञान अर्थात आयु तथा उसका ज्ञान, इस प्रकार आयुर्वेद का अर्थ है जीवन का ज्ञान।

आयुर्वेद शब्द चिकित्साविज्ञान को प्रकट करता हुआ केवल मनुष्य के जीवन से ही सम्बन्ध नहीं रखता अपितु इसमें हाथी, घोड़े, गौ आदि पशु–पक्षी तथा वृक्ष लता आदि उद्भिज्ज की चिकित्सा का भी विधान है।

लोगों का कल्याण करने वाले हितकारी एव विविध ज्ञान विज्ञानों में जो सबसे अधिक उपयोगी ज्ञान है। उसी को आयुर्वेदविज्ञान कहते हैं। यह आयुर्वेद विज्ञान केवल अपने या केवल एक दो व्यक्तियों के लिए ही उपयोगी नही है। अपितु इससे कुटुम्ब, समाज तथा सम्पूर्ण देश का उपकार एवं उन्नति होती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को इससे जानना चाहिए और इसका उपदेश एवं प्रचार करना चाहिए आयुर्वेद एक अनादि एवं शाश्वत सम्पूर्ण जीवन शास्त्र है ब्रह्मा के मुख से निकला आयुर्वेद सृष्टि के साथ–साथ चला आ रहा है। प्राचीन ग्रन्थों में जैसे ऋग्वेद और अन्य वेदों में इसकी उपलब्धि होना इसकी प्राचीनता का स्पष्ट प्रमाण है। आयुर्वेद के अविर्भाव के ब्रह्मा से इन्द्र तक का काल वैदिक है और बाद में सहिताओं का काल प्रारम्भ होता है।

चरकसहिता में चरक ने आयुर्वेद को शाश्वत माना है। उसके अनुसार जब से जीवन का प्रारम्भ हुआ और जब से जीव को ज्ञान हुआ तक से आयुर्वेद का प्रारम्भ हुआ।

आयुर्वेद की उत्पत्ति–

जिस क्रम से आयुर्वेद का पृथ्वी पर आना हुआ उसके सम्बंध लिखा गया है कि आयुर्वेद एक अनादि शास्त्र है। यह सृष्टि से पूर्व था और ब्रह्मा भी सृष्टि से पूर्व हुए जैसा कि सुश्रुतसंहिता में कहा गया है। आयुर्वेद के प्रथम प्रवर्त्तक ब्रह्मा जी ने आयु के ज्ञान को बताने के लिए प्रजापति को उपदेश दिया। प्रजापति ने अश्विनीकुमारों को उपदेश दिया और अश्विनी कुमारों ने इन्द्र को इन्द्र से आत्रेय, धन्वन्तरि आदि मुनियों ने ज्ञज्ञन प्राप्त किया। उसके बाद उन्होंने अग्निवेशादि मुनियों को ज्ञान दिया और अग्निवेशादिको ने अलग अलग अपने अपने नामों से सहिताएँ बनाई।

सबसे पहले आयुर्वेद ब्रह्मा जी से उत्पन्न हुआ ब्रह्माजी ने अर्थववेद का जो सारभूत आयुर्वेद है उसका प्रकाश करते हुए अपने नाम से ब्रह्मसंहिता नाम की एक लाख श्लोकें वाली एक सरल संहिता बनाई चरक सुश्रुत तथा कश्यप सहिताओं में आयुर्वेद के प्रचार की कथा कुछ भिन्न प्रतीत होती है। सुश्रुतसंहिता के अनुसार इन्द्र ने आयुर्वेद का सर्वप्रथम ज्ञान धन्वन्तरि को दिया उनसे सुश्रुत, औयधेनता, वैतर औरभ्र, पौराकलावत करवीर्य, गोपुररक्षित आदि शिष्यों ने आयुर्वेद का ग्रहण किया काश्यपसंहिता के अनुसार ब्रह्मा ने सृष्टि से पूर्व ही आयुर्वेद की रचना कर डाली थी। ब्रह्माजी से यह ज्ञान प्रजापति अश्विनी कुमार और इन्द्र को प्राप्त हुआ फिर इन्द्र से कश्यप, वशिष्ठ, अंत्रि और भृगु इन चार ऋषियों ने ज्ञान सीखकर अपने पुत्रों और शिष्यों को दिया।

चाकसंहिता के अनसार इन्द्र से आयुर्वेद का अध्ययन कर मनुष्य लोक में आयुर्वेद का उपदेश करने वाले सर्वप्रथम व्यक्ति भरद्वाज थे। अग्निवेश के गुरू

महर्षि अत्रेय ने भी आयुर्वेद का अध्ययन इन्हीं से किया ये गोत्र–पवर्त्तक ऋषि हुए इनके वशंज भी आयुर्वेद के ज्ञात हुए।

इस प्रकार संहिताओं में आयुर्वेद की उत्पत्ति ब्रह्मा जी से मानी गई है। संसार में जितने भी प्राचीन ग्रन्थ हैं। उनमें वेद सबसे प्राचीन है इसलिए आयुर्वेद का वेदों के साथ घनिष्ठ सम्बंध है। इसी कारण काश्यपसंहिता ने इसे पाँचवा वेद स्वीकार किया है।

आयुर्वेद का प्रयोजन–

किसी कार्य को करने क पीछे कर्त्ता का प्रयोजन अवश्य ही रहता है। सृष्टि रचयिता ब्रह्मा का आयुर्वेद की रचना करने में कोई कारण आवश्यक रहा होगा। आयुर्वेद को मुख्य रूप से दो प्रयोजन कहे गये है। (1) स्वस्थ पुरूष के स्वास्थय की रक्षा करना (2) और रोग से युक्त पुरूष के रोग का नाश करना।

अनुष्य को स्वास्थ रखना आयुर्वेद का प्रयोजन है जिससे स्वस्थ रहकर मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन पुरूषार्थ चतुष्टय का सम्पादन कर सके आयुर्वेद ही आरोग्य एवं आयुप्रदाता है। आयुर्वेद में प्रतिपादित विधान का परिपालन करने से दीघाय एवं चर्तुवर्ग के उर्पाजन में सहायक होता है। स्वास्थ्य का अदिष्ठान शरीर है और रोग का अधिष्ठान भी शरीर ही है। जीव शरीर द्वारा जो जो कर्म करता है। उस से ही वह स्वास्थ्य या रोग का अनुभव करता है।

शरीर और मन ये दोनां ही रोग के आश्रय माने गये हैं। कई रोग केवल शरीर पर और कई रोग केवल मन का आश्रय लेते हैं। शरीर व्याधि का मन पर और मानस–व्याधि का मन पर और मानस–व्याधि का शरीर पर प्रभाव पड़ता है। परन्तु उन्मात सन्यास आदि में मानस और शरीर दोषों दोनों प्राधान्तया दुष्ट होते हैं। धातुसम्यक्रिया भी इस आयुर्वेद शास्त्र का प्रयोजन है। जब धातुओं में वैषम्य–उत्पन्न होता है तो विकारोत्पत्ति होती है। किन्तु जब धातुओं में साम्य रहता है तो आरोग्य का सम्पादन होता है अर्थात् धातु साम्यक्रिया इस तन्त्र का प्रयोजन है। आयुर्वेद का

दूसरा प्रयोजन चिकित्सा है और चिकित्सा तभी सफल होती है। जब रोगो के सभी परीक्षणीय भावों की परीक्षा कर उसकी विकृतियों का परिज्ञान करने के पश्चात् चिकित्सा की जाऐ। समान्यतः हमारे द्वारा जो आहार ग्रहण किया जाता है उसका जठराग्नि के द्वारा पाचन होने के पश्चात वह सीधा दोषों को प्रभावित करता है। मनुष्य के द्वार जब अधिक आहार का ग्रहण किया जाता है तो शरीर में रोगों की वृद्धि क्षय होता है जिससे धातुएँ प्रभावित होती है और धातु के वैषम्य के कारण शरीर में विकारोत्पत्ति होती है। हिताहार दोषों की समस्थिति बनाए रखने में सहायक होता है। आयुर्वेद के अनुसार स्वस्थ व्यक्ति के लिए दोषी की साम्यावस्थ उत्पन्न आवश्यक है। स्वास्थ्य या स्वस्थ पुरूष की परिभाषा आयुर्वेद की दृष्टि से समीचीन मानी गई है।

आयुर्वेद एक जीवन विज्ञान तो है ही वह एक चिकित्साशास्त्र भी है। जो व्याधियों से व्याकुल लोगों की चिकित्सा कर उनके सुखमय सुस्वाथय सम्पादन में सहायक होता है। अतः चिकित्सा का प्रयोजन भी स्वाास्थ की रक्षा करना है। जैसे आयुविज्ञान रत्माकर में प्रतिपादित है।

शास्त्रोक्त प्रमाणों से आयुर्वेद का प्रयोजक सुस्पष्ट है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि जब सम्यक् चिकित्सा के द्वारा विभिन्न रोगों का उपशामन होता है और रसायन बाजीकरण आदि उपायों तथा अन्य नियमों का पालन करने से स्वास्थय की रक्षा होती है तो इसके परिणामस्वरूप सुखायु आदि का लाभ ही आयुर्वेद का मूल प्रयोजन है।

सदर्भ सूचि–

1. आयुर्वेद परिचय – राजकुमार जैन
2. आयुर्वेद का इतिहास – अत्रिदेव
3. आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास – आ. प्रियवत
4. चरकसांहिता – पं. काशीनाथ शास्त्री
5. सुश्रुतसंहिता – अम्बिकादत्त शास्त्री